Written by भारत सहि
Tuesday, 20 March 2018 12:20

: □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□, □□ □□□□□□□□-□□□□□□ □□□□□□□ □□□□ :□ □□□□□ □□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□ : □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ :

□□□□□ □□□□□

□□□□ : प्रयि पत्रकार साथयिों □वं अग्रजों,

इधर बीच, राज्य मुख्यालय मान्यता प्राप्त संवाददाता समति के चुनावों को लेकर फरि से चहलकदमी शुरू हो गई है□ चुनावों को लेकर सरगर्मी होनी ला□मी भी है□ अफसोसनाक पहलू ये है कि जसि तरह से पत्रकारों का दो गुट बनाकर चंद लोग अपनी राजनीतकि और नहियित स्वार्थी मनोवकिार संक्रमति कर रहे हैं वह पत्रकारतिा जगत के लि□ बेहद घातक है□ यही सबसे ब□ा कारण भी है कि पत्रकारतिा जगत की हैसयित सत्ता की न□रों में बौनी होती जा रही है□

हम, भरोसे के साथ कह सकते हैं कि अधसिंख्य पत्रकार मौजूदा गुटबाजी से सहमत नहीं हैं□ इसके बावजूद मुठ्ठी भर लोग स्वाभमिानी, अपने कर्म के प्रतसिमर्पति कलम के सपिाहयिों के तथाकथति नेता बने हु□ हैं□ कोई भी समाज या संगठन अपना मुखयिा इसलि□ चुनता है कि वह उसके हतिों की चतिा और सुरक्षा करे□ जनि लोगों ने अमुक व्यक्ति को अपना नेता माना वह त्याग के साथ जरूरतमंद साथयिों का कंधा मजबूती के साथ मजबूत कर सके□

फलिहाल तो अब तक यह सपना ही बना हुआ है□ ये हकीकत कसिी से छुपी नहीं है कि नेताओं ने अब तक अपना ही स्वार्थ साधा और डटकर स्वयंभू नेता बने रहे□ असंतोष ब□ा तो दो गुट हो ग□□ सोचने वाली बात है कि इसमें सामान्य सदस्यों का क्या भला हुआ□ आखरि जसि राजनीतकि की स□ाँध पर हम नाक सकि□ते हैं और जसि प्रपंच को हम उठते-बैठते गाली देते हैं वही स□ी सयिासत तो हमारे बीच पनप चुकी है□

दोस्तों, मौजूदा गुटबाजी और उसके कारण उपजी गंदगी को यही समेटा जाना अपरहिार्य हो चला है□ लहिाजा आप सभी स्वाभमिानी, बुद्धजिीवी और कर्मयोद्धाओं से मेरी वनिम्र अपील है कि इस पत्रकारीय गुटबाजी को यहीं दफन करने में आगे आइ□□ इसका इलाज यही है कि जब तक सर्व सम्मतसि से मान्यता प्राप्त पत्रकार समति□क न हो तब तक कोई भी चुनाव वैधानकि न माना जाय□

सभी सम्मानति पत्रकार बंधुओं से ये आह्वान भी है कि यदजिबरन हमारे ऊपर समति के नाम पर गुटबाजी थोपी जाती है तो हम कसिी भी चुनाव में हसि्सेदारी न कर वरिोध दर्ज करा□□ पत्रकार, स्वाभमिानी और बुद्धजिीवी वर्ग है, इसे राजनीतकि की तर्ज पर भे□ों का झुंड समझने का दुस्साहस कसिी को नहीं करना चाह□□ पूरी पत्रकारतिा जगत के लि□ बेहतर यही होगा कि सर्वसम्मतसि से □क समति अटूट समति रहे□ समति का हर सदस्य सम्मानति होता है, इसे लोकप्रयि नेतृत्व की जरूरत है कसिी गैंग लीडर या जगलर की नहीं□

Written by भारत सहि
Tuesday, 20 March 2018 12:20

दोस्तों, इस आशय का पत्र शासन में भी समर्थ अधिकारियों तक पहुँचाया जा□ गा जिससे समिति चुनाव के नाम पर अराजकता का तांडव न होने पा□ □

अपेक्षा है कि मेरे मत से सहमत होंगे तो साथ आकर पत्रकार हितों का मनोबल जरूर ब□ ा□ ंगे□ सकारात्मक सुधार की गुंजाइश हो तो भी आप सब की राय हर्ष पूर्वक सुनने और मानने को आतुर...

आपका ही,

भारत सहि